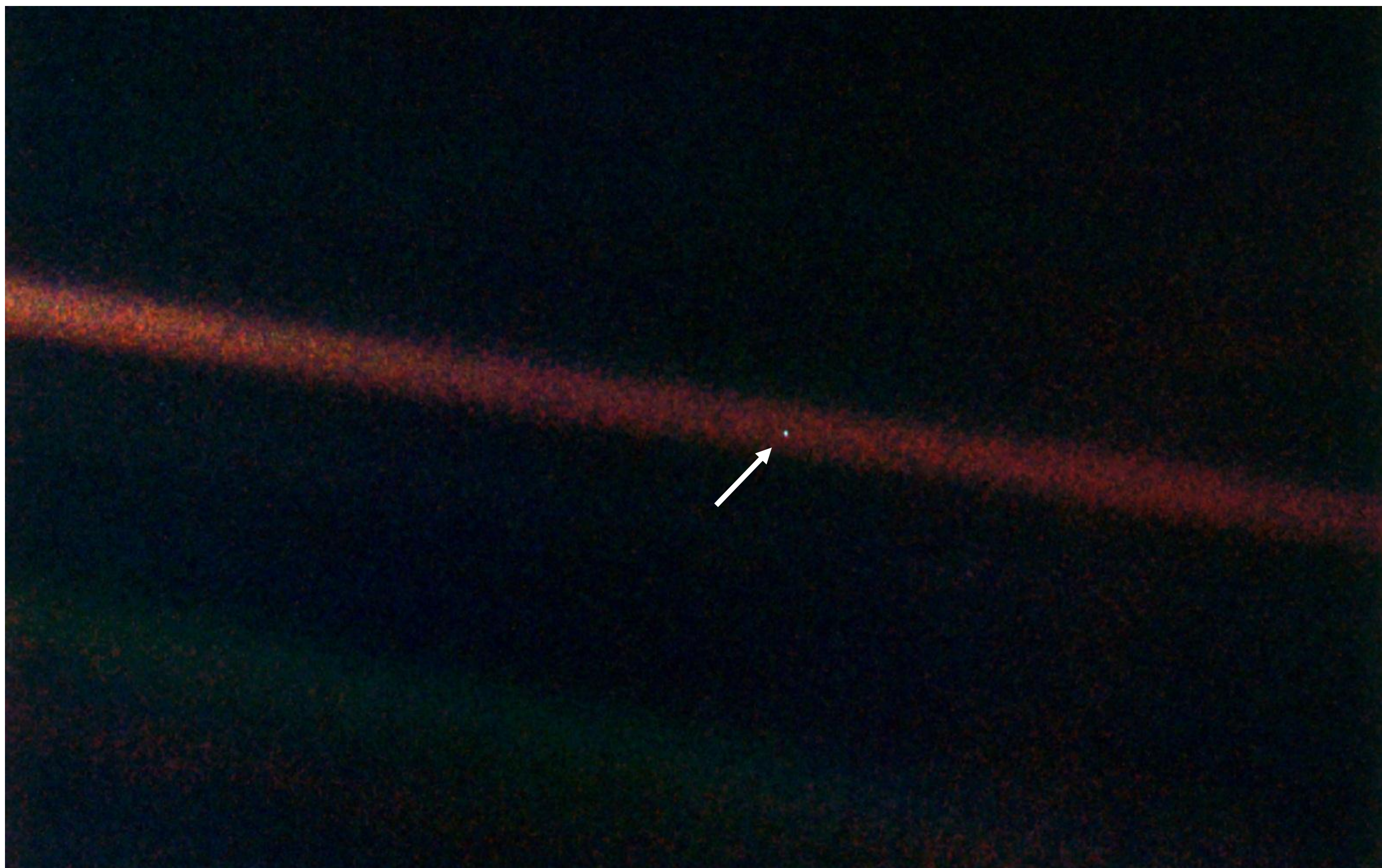
धुंधला नीला बिंदु



पृथ्वी की यह तस्वीर, जिसमें पृथ्वी एक छोटे से चमकीले बिंदु की तरह दिख रही है, 14 फरवरी 1990 को वॉयेजर अंतरिक्षयान द्वारा पृथ्वी से 6 अरब किमी दूर से ली गई थी.

उस बिंदु पर फिर से एक नज़र डालो. वह हमारा घर है... हमारी धरती है. हर इंसान जिसे तुम प्यार करते हो, जिसे तुम जानते हो, जिसके बारे में तुमने सुना है, वह जो कभी पैदा हुआ, उसने इसी बिंदु पर पूरा जीवन बिताया. हमारे सारे सुख-दुःख, हजारों धर्म और मान्यताएं, हरएक शिकारी, जांबाज़ और कायर, हर राजा और किसान, प्रेम में डूबा हर जवान जोड़ा, हर माता और पिता, उम्मीदों से भरा हुआ हर बच्चा और वैज्ञानिक, पढ़ाने वाला हर शिक्षक, हर भ्रष्ट नेता, हर 'सुपरस्टार', हमारे इतिहास का हर संत और पापी वहीं जीया- सूर्य की एक किरण में तैरते हुए धूल के उस कण पर.

इस विशाल ब्रह्माण्ड में हमारी पृथ्वी एक बहुत ही छोटी जगह है. अनगिनत इंसानों की उन हत्याओं के बारे में सोचो जो उन सेनापतियों और शहंशाहों ने की, ताकि अपनी शान और जीत में वे इस बिंदु के किसी छोटे से हिस्से के कुछ पलों के लिए मालिक बन सकें. उन अनगिनत अत्याचारों के बारे में सोचो जो इस बिंदु के एक कोने में रहने वाले लोगों ने किसी दूसरे कोने पर रह रहे अपने ही जैसे लोगों पर किए. हमारी कितनी गलतफहमियां हैं, एक दूसरे को मार डालने का कितना उतावलापन है, दूसरे इंसानों के प्रति कितनी नफरत है!

हम इंसानों के ढकोसले, हमारा घमंड, हमारा यह भ्रम कि समूचे ब्रह्मांड में हम लोगों का एक ख़ास स्थान है, इन तमाम बातों को यह धुंधला प्रकाश बिंदु चुनौती देता है. हमारा ग्रह ब्रह्माण्ड के इस घने अंधेरे में छोटा सा अकेला धब्बा है. ब्रह्माण्ड की इस विशालता में ऐसा कोई संकेत नहीं कि हमारी दुनिया को हमारी बुराइयों से बचाने के लिए दूसरे ग्रह से कोई आएगा.

अभी तक ज्ञात ग्रहों में केवल पृथ्वी ही है जिसमें जीवन है. ऐसी दूसरी कोई जगह नहीं है जहां निकट भविष्य में हम रह सकें. शायद हम दूसरे ग्रहों को देखने जा पाएं. पर वहां बसना फिलहाल हमारी पहुंच से बहुत दूर है. हमें अच्छा लगे या न लगे, पर अभी के लिए केवल पृथ्वी ही वह जगह है जहां हम रह सकते हैं.

ऐसा कहा गया है कि खगोलविज्ञान एक विनम्र करने वाला और बेहतर इंसान बनाने वाला अनुभव होता है. हमारे घमंडों की मूर्खता का हमारी इस छोटी सी दुनिया की इस तस्वीर से बेहतर शायद ही कोई और सबूत हो. यह मुझे एक दूसरे के प्रति और अधिक दयालु होने की जिम्मेदारी की याद दिलाता है, और हमारे इस धुंधले नीले धब्बे को बचाने और संवारने की भी, जो हमारा एकमात्र घर है.

- कार्ल सेगन (1934-1996), खगोलवैज्ञानिक



38,4000 किमी दूर चन्द्रमा से पृथ्वी का नजारा



कैसिनी अंतरिक्षयान द्वारा 90 करोड़ किमी दूर शनि गृह के पास से पृथ्वी की तस्वीर